इल्लुमिनाति

उदय राज सिंह
धीरज चौधरी 'दिवेश'

खण्ड – 2
भाग 11 से 20

इल्लुमिनाति

खण्ड – 2

भाग 11 से 20

लेखक

उदय राज सिंह

सम्पादक

धीरज चौधरी 'दिवेश'

प्रकाशक : धीरज कंप्यूटर
आवरण : धीरज चौधरी 'दिवेश'
आवरण सज्जा : धीरज चौधरी 'दिवेश'
डिजिटल मुद्रक : धीरज कंप्यूटर दिल्ली – 5
मुद्रक संपर्क : 8586918719, 8851073363
संस्करण : 2017

© उदय राज सिंह व धीरज चौधरी 'दिवेश'

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 11

मित्रो भारत में 1947 के बाद अंग्रेजी विषय स्कूलों में इस तर्क के साथ आरम्भ किया गया कि यूरोप का समस्त विज्ञान अंग्रेजी में है इसलिये स्कूलों में अंग्रेजी आवश्यक है !

क्या ये आश्चर्य की बात नहीं कि 1950 में भारत की 35 करोड़ आबादी में यदि 5 करोड़ स्कूली विद्यार्थी थे तो

केवल 3 विषय !

भौतिक विज्ञान Physics
रसायन विज्ञान Chemistry
जीव विज्ञान Biology

केवल 3 विषय की कुछ शायद 40 किताबो को पढ़ाने के लिये 5 करोड़ विद्यार्थियों को अंग्रेजी क्यों सिखाने की आवश्यकता पड़ी ?

जबकि इन 40 किताबो को हिंदी में एवम अन्य प्रचलित भाषाओं में अनुवाद कर लिया जाता तो उचित होता !

केवल 40 अनुवादक ही 1 माह मेहनत करते !
5 करोड़ विद्यार्थी और आज 30 करोड़ !

परेशांनी से बच जाते कि पहले अंग्रेजी सीखो फिर विज्ञान सीखो !

साथ ही अब, जबकि अंग्रेजी के स्कुल गावो तंक में खुल चुके है, तो विज्ञान, कार्मस, आर्ट्स आदि की किताब एवम समस्त किताबे अंग्रेजी में होती है !

तो फिर अंग्रेजी मॉध्यम में पढ़ने वाला विद्यार्थी जब अंग्रेजी जानने, समझने लगा है और अपने विज्ञान, कॉमर्स आदी विषय की भाषावाली से परिचित हो चूका है !

तो क्यों अंग्रेजी मॉध्यम में होने के कारण कक्षा 9 से 12 की हर किताब अंग्रेजी में ही है तो स्कुल में कक्षा 9 से 12 तक अंग्रेजी साहित्य की 3 या 4 किताबे पढ़ाई जाती है जिसमे शेक्सपियर के नाटक, व्यर्थ की अंग्रेजी कवीताये, टाल्सटाय की कहानियां आदि रहती है !

और पाठ्यक्रम का बोझ बढ़ता है, बस्ते का बोझ बढ़ता है !
और इन व्यर्थ की किताबो से कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता !

क्या विदेशी लेखकों, विदेशी साहित्य की तरफ बाल बुद्धि को आकर्षित करके,
भविष्य में विदेशी प्रकाशकों की किताबें बिकवाना उद्देश्य है ?

जोकि रेलवे स्टेशनों के बुक स्टालों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है !

यदि अंग्रेजी साहित्य ही पढ़ाना है तो अंग्रेजी में अनुवादित चाणक्य नीति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, पंचतंत्र, मालगुडी डेज आदि क्यों नहीं पढ़ाये जाते जोकि बच्चों को बेहतर समझ आते !

जानबूझकर भारतीय साहित्य की उपेक्षा और विदेशी साहित्य को प्रसिद्ध करते जाने का 1947 से लेकर अब तक का दोषी कौन ?

सरकार बदल गई पर नीति 1 इंच भी नही बदली !
क्या अंग्रेजी परदे के पीछे कोई है ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग-12

सामान्य ज्ञान पर्चा !

जब भी हम किसी सरकारी नौकरी के लिये कोई परीक्षा देते है तो एक पर्चा सामान्य ज्ञान का अवश्य होता है !

क्यों ?
क्या ये अवश्यक है ?

परमाणु संस्थान, रेलवे, विमान सेवा, विमान निर्माण, खनन विभाग, स्टील उद्योग आदि में कार्य करने हेतु जब इंजिनियर, वैज्ञानिक की परिक्षा होती है !

तो विज्ञान से सम्बंधित पद के लिये, B.Sc, BE, आदि डिग्री की योग्यता निर्धारित की जाती है !

जो विद्यार्थी, जिनका शैक्षणिक चिंतन उच्च स्तर का है, नए अन्वेषण, नए विचारों, नई अभिकल्पनाओ में खोए रहते है !

जिन्होंने डिग्री में सर्वोत्कृष्ट अंक प्राप्त किये, वो ऐसी परिक्षा देने जाते है!
और फेल हो जाते है !

क्योंकि

उनको नही मालुम था कि क्रिकेट में शतक किसने सबसे अधिक बनाये!
अकबर कब मरा !
पानीपत का तीसरा युद्ध कब हुआ !
चीन की दिवार किस राजा ने बनाना आरम्भ की आदि !

संविधान की किस धारा के अंतर्गत आरक्षण की बात लिखी है !
मेक्सिको की मुख्य फसल क्या है !

अब सोचिये ये प्रश्न एक इंजिनियर के कार्य क्षेत्र वैज्ञानिक के कार्य के लिए आवश्यक है क्या ?

यदि उपर्युक्त तथ्यों की जानकारी एक परमाणु वैज्ञानिक या इसरो के वैज्ञानिक प्रत्याशी को नहीं है तो उसका या देश का कोई नुकसान हुआ ?

अब प्रतिभाशाली इंजिनियर, वैज्ञानिक 3 बार परिक्षा देते है फेल होते है क्योंकि सामान्य ज्ञान बहुत कमजोर, और फिर ये वैज्ञानिक निजी कम्पनियो, विदेशी कम्पनियो में चले जाते है और उनके लिए अविष्कार करने लग जाते है !

मित्रो एक सामान्य ज्ञान के पर्चे ने देश से ना जाने कितने ऐसे वैज्ञानिक, इंजीनियरों को भारत से निर्वासित करवा दिया !

आश्चर्य है कि साधारण विषय ज्ञान और अच्छे सामान्य ज्ञान के विद्यार्थी ऐसी परीक्षाओं में चुन लिए जाते है !

और अनेक रामानुजाचार्य, रमन, जगदीश चंद बोस जैसे हीरे विदेश जाकर स्वतन्त्रतापूर्वक काम करते हुए पूरी दुनिया में नाम कमाते है!

और इसीलिये जानबूझकर प्रतिभाशाली लोगो को भारत से भगाने के लिये ऐसी प्रतियोगी परीक्षाओं का पाठ्यक्रम बनाया गया !

तभी तो हरगोविंद खुराना को अमेरिका जाकर नोबल पुरस्कार मिला !

भारात के एक डॉक्टर ने कनाडा में सर के प्रत्यारोपण का ऑपरेशन किया !

जीरो पार्टिकल की खोज में 30 भारतीय वैज्ञानिक है, नासा में 50% भारतीय वैज्ञानिक है !

और ये सब लोग भारत से ऐसे ही पीरक्षाओ, अनुसंधान हेतु उचित वातावरण, संस्थान ना मिल पाने के कारण विदेश चले गए !

आखिर भारत के सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मपुत्रो को भगाने हेतु किसने बनाये व्यर्थ के असंगत नियम बनाये और आज तक जारी है ?

सरकार कोई भी हो नीतियां नही बदल पा रही किसके दवाब में ?

संज्ञानात्मक !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 13

विदेशी फसल !

स्कूलों में एवम यदा कदा अखबारों में ये प्रायः लिखा रहता है कि आलू पोलैंड से आया टमाटर जापान से गन्ना ब्राजील से भारत आया आदि !

बस ये एक लाइन लिख कर फिर आगे आलू, टमाटर आदि के गुण, सब्जी बनाने की विधि, व्यंजन, औषधीय उपयोग आदि का वर्णन होता है ।

लेकिन ये कभी नहीं लिखा रहता कि भारत से कौन लेने गया था या वहां से कौन भारत लेकर आया और कब ?

एक 99% सत्य लेख की आड़ में केवल एक झूठ लिख दिया जाता है जिसको हमारा अवचेतन मस्तिष्क ग्रहण कर लेता है और ये एक तथ्य हमको जीवन भर याद रह जाता है और ऐसे ही 1% प्रतिदिन के झूठ पढ़ते हुए 10 साल का बालक 40 वर्ष की उम्र तंक मानसिक गुलाम बन जाता है!

जबकि सत्य ये है कि पुराणो में सम्राट पृथु द्वारा कृषि कार्य के विस्तार का प्रसंग आता है अग्निपुराण में हजारो औषधीयो एवम अनाज, शक्कर आदि का वर्णन है!

निघंटु ग्रंथो में आलू, प्याज, गन्ने, दाल, पालक, घी, दूध, चावल, भिन्डी आदि का औषधीय वर्णन है वो भी संस्क्रत में !

महाभारत काल में विदुर जी की पालग साग और द्रौपदी की हांडी के चावल का वर्णन है !

साथ ही भगवान् को छप्पन भोग अर्पित करने वर्णन पूजा पध्दति में है!

और प्राचीनकाल से लेकर कालियुग में भारत के सम्राट का राज्य तो पृथ्वी के अधिकांश हिस्से था जोकि कालान्तर में एशिया के कुछ हिस्से तक 1100 वर्ष पहले तक सम्राट पृथ्वीराज चौहान के समय तक रहा है ! **तो फिर जापान, बर्मा, थायलैंड ये विदेश क्षेत्र कैसे हो गए ?**

भारत के प्राचीन इतिहास के हिसाब से आज विशेष एकपोथिया लहसुन केवल आसाम तरफ पाया जाता है !

यदि ये कुछ 500 किलोमीटर दूर पाया जाता तो तुरंत इल्लूमिनाती के एजेंट लिख देते कि ये लहसुन भारत में चीन से आया !

(जबकि वस्तुत चीन का बहुत सारा सीमावर्ती हिस्सा कुछ दशक पहले तक भारत का ही था !)

भारत के लोगो को जंगली अज्ञानी, भारत भूमि को साधनविहीन घोषित करने के लिये मैक्समूलर की आर्यो के बाहर से आगमन की थ्योरी एवम डिस्कवरी आफ इंडिया किताब को सही साबित करने के लिये इल्लुमिनाति प्रतिदिन एक झूठ निर्मित करते जाता है और अंग्रेजी अखबार, पत्रिकाएं, मीडिया उसको प्रसारित करते है !

जो कि फिर हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित होकर पुरे देश में फ़ैल जाता है और मानसिक गुलामो की संख्या में वृद्धि हो जाती है!

एक श्रृंखला के रूप में यूरोप में जन्मा झूठ भारत की किताबो, अखबारों में परोसने वाले कौन और उद्देश्य क्या ?

संज्ञानात्मक !

क्रमशः !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षणयंत्र

भाग - 14

कम्प्यूटर

ज्ञान की वृद्धि विभिन्न किताबो के अध्ययन और चिंतन से होती है किंतु किताबो से अध्य्यन की प्रवृत्ति अब विद्यार्थियों में समाप्त प्रायः ही है !
क्योंकि कम्प्यूटर पर गूगल के मॉध्यम से सब कुछ उपलब्ध है !

अब कम्प्यूटर को कक्षा 6 से सीबीएसई स्कूली पाठ्यक्रम् में सम्मिलित किया गया है!

क्या स्कूली विद्यार्थियो के लिए ये आवश्यक है ?

आपके घर में कूलर, फ्रिज, एसी, बाइक, कार, पानी की मोटर, ट्यूबलाइट होते है !
ये सब विज्ञान नहीं है बल्कि ये विज्ञान के अंतिम सुविधाजनक उपभोक्ता उत्पाद है !

जिसको वर्तमान में Consumer Product कहते है और Consumer इसका End User अंतिम उपयोगकर्ता होता है !

तो क्या उपर्युक्त प्रतिदिन उपयोग में आने वाले वस्तुओं के विषय में स्कूल में 6वी से लेकर 10वी तक पढ़ाया जाता है ?
उत्तर - नही पढ़ाया जाता !

फिर कम्प्यूटर की पढ़ाई, इसके साफ्टवेयर, हार्डवेयर के विषय में कक्षा 6 से क्यों आरम्भ ?

क्योंकि

1. जब ये चीजे पाठ्यक्रम में होगी तो विद्यालय में हर कक्षा में कम्प्यूटर रखना होगा जोकि अभी परम्परा लागू हो चुकी है जिसके लिए भुगतान विद्यार्थियों के माता पिता करते है !

इस तरह बिना विज्ञापन, मार्केटिंग, सेल्समैन के इन सब के खर्चो को बचाते हुए !
यूरोप के एजेंटो ने यत्नपूर्वक स्कूली पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर अध्याय डालवा दिया !
फिर स्कूलों ने कम्प्यूटर खरीदे !
मातापिता ने कम्प्यूटर खरीदे, प्रिंटर आदि सहायक वस्तुएं खरीदते जा रहे प्रतिवर्ष और इस तरह अरबो रुपए का व्यापार अमेरिका ने कर लिया !

बिना एक कदम धुप में मेहनत किये !

भारत फिर गरीब हुआ क्योंकि भारतीय अरबो रूपये की मुद्रा प्रतिवर्ष विदेश जाती है इस कम्प्यूटर आध्याय के कारण !

2. अब पाठ्यक्रम में कोई भी विषय वस्तु का वर्णन होता है जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक तो शिक्षक कहते है उनकी फोटो लाओ और 2 लाइन उनके विषय में लिखकर लाओ !
तो माता पिता सायबर कैफे जाते है या घर में इंटरनेट से प्रश्नों के उत्तर खोजते है, प्रिंट करते है !

इस तरह प्रिंटर उसकी स्याही की भी अरबो रूपये की बिक्री हर घर में, बिना सेल्समैन, विज्ञापन के हो जाती है !

और भारत फिर गरीब हुआ प्रत्येक ऐसे प्रिंट पेज के साथ !

3. अब जब घर में इंटरनेट होगा तो हम किसी भी विषय को सर्च करे तो अनेकानेक फोटो के बीच में या साहित्य के नीचे अवश्य ही एक अश्लील फोटो, वीडियो आ जाता है ऐड के रूप में !

भले ही आप दुनिया के धर्म, या ईसा मसीह, या श्री राम गूगल पर लिखेगे तब भी यही परिणाम निकलेगा !
यानी एक हजार गेहू के दानों के साथ केवल 1 घुन, जोकि पुरे गेहू को बर्बाद कर देगी !

और इस अश्लील चित्र या वीडियो के साथ, इल्लुमिनाति का उद्देश्य पूर्ण होता है भारत के विद्यार्थियों को गलत दिशा में खींच लेने का !

मित्रो यही कारण है स्कूली पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर सम्मिलित करवाने का !

कम्प्यूटर इंजीनियरिंग का एक आविष्कार है मूलभूत विज्ञान नही !

कम्प्यूटर का मूलभूत विज्ञान इलेक्टानिक्स एवं प्रोग्रामिंग है जोकि इंजीनियरिंग स्तर की होती है!

विद्यालयों में मूलभूत विज्ञान पढ़ाया जाता रहा है वर्ष 2000 तक फिर अचानक पाठ्यक्रम में इतना व्यर्थ का बदलाव कैसे ?

किसके इशारे पर ?

जिससे कि भारत की आर्थिक हानि भी हो और चारित्रिक हानि भी ?

कौन है परदे के पीछे ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 15

गुरु पूर्णिमा Vs शिक्षक दिवस

भारत में हिन्दुओ के विभिन्न पर्व, त्योहारों के विरुद्ध इल्लुमिनाति छिपे रूप में बहुत परिश्रम कर रहा है ताकि ये त्योहार हमारे मन से विलोपित होते जाए या फिर ऐसा प्रचार किया गया मीडिया के मॉध्यम से कि हिन्दू स्वयं अपने त्योहारों का विरोध करे !
जैसे होली पर रंग, दिवाली पर पटाखे, संक्रांति पर पतंग का आदि !

गुरु पूर्णिमा को हिन्दू (सनातन, जैन, सिख, बौद्ध) अपने गुरुजनों के चरणों में सर नवाते है !

और इस सर नवाने में प्राचीन ऋषि परम्परा, गुरुकुल परम्परा जीवित हो जाती है !
शास्त्र जीवित हो जाते है धर्म प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका असर शेष 364 दिन तक रहता है !

तो गुरु पूर्णिमा का महत्व कम करने के लिये -

1. 1991 में केबल टीवी चैनल आरम्भ हुए और वर्ष 2000 तक जब ये गाँव तंक पहुच गये, तब 2001 से हिन्दू संतो का टीवी पर निरादर आरम्भ हुआ ध्यान दीजिए केवल उन संतो का निरादर हुआ जो कि हिन्दू धर्म को प्रतिष्ठित करने में लगे रहे !

कांग्रेस के हित में काम करने वाले या हिन्दुओ को भ्रमित करने वाले चंद्रास्वामी जैसे ढोंगी का विरोध कभी नही हुआ राधे माँ, महामंडलेश्वर अधोक्षणन्द आदि की खोजबीन, प्रमोद कृष्णन, अग्निवेश पाखण्डी का निरादर टीवी पर कभी नही किया !

किंतु हिन्दू धर्म के प्रति हिन्दुओ के भले के लिये काम करने वाले बाबा रामदेव जी, श्रृंगेरी शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी

पश्चिम यूरोप की इसाई धर्म-बाइबल-फ्रायड की जड़ उखाड़ने वाले **रजनीश**, जंगलो में वनवासी बच्चों के लिये स्कुल खोलने वाले -हिन्दू गरीबो के लिये कुटीर उद्योग **आसाराम बापू**, कुछ प्रयत्न महाराज **विद्यासागर** के निरादर के लिये 2004 में हुआ पर 2 दिन की खबरों के बाद ही दब गया था !

मित्रो गुरु पूर्णिमा जिस दिन पुरे भारत में विद्यार्थियो को शिक्षक के चरण छूना चाहिए था !
उस दिन को त्यौहार के रूप में बनाने की बजाय डा राधाकृष्णन के नाम पर शिक्षक दिवस मनाना आरम्भ किया !

जबकि शिक्षा क्षेत्र में इनका कोई योगदान नहीं था और इनके ऊपर आरोप भी लगा था की अपने ही छात्र की पीएचडी को कॉपी करके पहले स्वयं डॉक्टरेट की डिग्री हासिल कर ली थी !

यदि तत्कालीन किसी गुरु, शिक्षक के नाम पर शिक्षक दिवस मनाना था तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी के नाम पर क्यों नहीं ?

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रधानन्द जी के नाम पर क्यों नहीं ?

आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के प्रेरक जगदीश चंद्र बासु, डा रमन, या डा होमी जहांगीर भाभा के नाम पर क्यों नहीं ?

प्रथम आधुनिक विमान के अंतराष्ट्रीय वैदिक वैज्ञानिक शिव जी तलपड़े के नाम पर क्यो नही?

पूना के 2 आयुर्वेदिक प्लास्टिक सर्जनों के नाम पर क्यों नहीं ?

वो इसलिये नही क्योंकि इन महत्वपूर्ण लोगो में से किसी एक के भी नाम से शिक्षक दिवस या गुरु दिवस होता तो हर विद्यार्थी इनके विषय

में जानने का प्रयत्न करता और भारत के प्राचीन धर्म ग्रंथों, वेदो, पुराण आदि की तरफ आकर्षित होता !

और हां ऊपर जितने भी नाम लिखे है उनमें से प्रत्येक के सामने डा राजेंद्र प्रसाद एक साधारण व्यक्ति ही थे तो फिर उनके नाम से स्कूलों में गुरु दिवस शिक्षक दिवस क्यों नही मनाया जाता ?

किसके इशारे पर हिन्दू श्रेष्ठ वैज्ञानिकों की अनदेखी और एक साधारण चोर कांग्रेसी को जबरदस्ती पुरे भारत के स्कूलों का गुरु बना दिया गया ?

मित्रो इस तरह गुरु पूर्णिमा को शासकीय रूप से उपेक्षित कर दिया गया जिसको एक राष्ट्रीय त्यौहार होना था !

उसको मात्र हिन्दू त्यौहार ही रहने दिया और हर बार नई पीढ़ी के बच्चे इससे दूर होते जा रहे !

बिना इसका महत्व समझे और इस तरह प्राचीन ऋषियो का नाम, प्राचीन ग्रंथ, प्राचीन चरण स्पर्श परम्परा को एक झटके में नेहरू ने विलोपित करवा दिया !

किसके इसारे पर ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 16

बीएड, एमएड (BEd, MEd) !

मित्रो वर्ष 2000 से पहले तक स्कूलों में कार्यरत पढाने वाले शिक्षक को ही बीएड, एमएड करने का प्रावधान था !
ताकि बच्चों को पाठ सिखाने का सही तरीका, सरल तरीका, उनके मनोविज्ञान को समझने, उनको प्रोत्साहित करने के तरीके सिखाये, समझाए जा सके !

वर्ष 2000 के बाद अचानक पूरे देश में बरसाती कुकुरमुत्ते या पान की तरह बीएड कालेज खुल गए और
निजी या सरकारी स्कूल में अध्यापन कार्य हेतु ये अनिवार्य योग्यता निर्धारित कर दी गई !

क्यों ?

अब एक बात स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि

1. जिस विद्यार्थी ने कॉलेज मे 90 प्रतिशत से B.Sc या M.Sc किया है वो अधिक बुद्धिमान होगा या जिसने 60% से यही डिग्री + बीएड किया है वो ?

वर्तमान मापदंड के अनुसार 60% वाले प्रत्याशी को नौकरी हेतु योग्य माना जाएगा क्योंकि उनके पास B. Ed की डिग्री नही है!

क्या ये आश्चर्य की बात नहीं ?

आखिर इन बीएड और एमएड पाठ्यक्रम का उद्देश्य क्या है ?

तो मित्रो उद्देश्य ये है कि विद्यार्थियों का पैसा व्यर्थ करवाना !

2 साल का कीमती समय नष्ट करवाना!

और सबसे महत्वपूर्ण ये कि

योग्य प्रत्याशी यदि आर्थिक रूप से सक्षम नही है तो उसको अध्यापन कार्य में नहीं आने देना बल्कि पैसे के बल पर जो डिग्री हासिल कर ले उसको ही शिक्षक बनने का अवसर मिले और बच्चों का भविष्य खराब हो !

जोकि **इल्लुमिनाति** का उद्देश्य है !

साथ ही इन पाठ्यक्रमो में देखिये पूरी तरह यूरोप के मनोविज्ञान के अध्याय लिखे हुए हैं!

भारत से सम्बंधित तथ्यों का उल्लेख ना के बराबर है !

जबकि होना ये चाहिए इस बीएड पाठ्यक्रम में स्कूल में पढ़ने वाला विद्यार्थी यदि किसान या मोची या रिक्शेवाले की सन्तान है तो कैसे उसको प्रोत्साहित किया जाए !

संस्कारित कैसे किया जाए !

भारतीय किशोर, युवतियों को किस तरह से समझाया जाए !

किंतु बी एड, एम एड की किताबो में पूरी तरह यूरोपीय विद्वानों का साहित्य भरा हुआ है जोकि भारत के किसी भी सन्दर्भ में उपयुक्त नही!

और 2 वर्ष के लंबे पाठ्यक्रम की क्या आवश्यकता यदि केवल Teaching Techniques ही सिखानी है !

और इन बीएड कोर्सेस की विफलता स्पष्ट दिखाई देती है जब हम लोग साल में कई महीने बच्चों को क्राफ्ट वर्क हाथ में लिये हुए ऑटो या बस या रिक्शे में सवार देखते है !

और कॉपी चेक करिये तो चित्र बनाने के नाम पर व्यर्थ के चित्र बने हुए रहते है!

क्या बस या प्लेन या मॉल या बाँध का चित्र या क्राफ्ट बनाना जरूरी है जबकि आजकल हर चीज का वीडियो, फोटो गूगल पर उपलब्ध है ?

अनेक अनुभवी शिक्षकों का कहना है कि बच्चों को पढ़ाने और सम्भालने का तरीका कोई किताब नही सीखा सकती ये शिक्षक अपने अनुभव से सीखता है।

साथ ही 2 साल के कोर्स में पढ़ा हुआ कुछ याद नही रह जाता वर्तमान कक्षा के अनुरूप पढाना पड़ता है!

विशेषकर बीएड, एमएड के पाठ्यक्रम में भारतीय सभ्यता, गुरु शिक्षक सम्बन्ध, व्यवहार के विपरीत लैंगिक तथ्य दिए होते है जोकि पूर्णत: यूरोप से आयातित कापी पेस्ट है (संविधान की तरह), और कुछ आपात्तिजनक, कुछ अव्यावहारिक !

भारत के स्नातक विद्यार्थियों का समय नष्ट कराने, पैसा खींचने (अस्पताल की तरह), निर्धन योग्य प्रत्याशियों को नौकरी से दूर रखने, यूरोपीय साहित्य मनोविज्ञान को जबर्दस्ती प्रसारित करने और अंततः स्कुली बच्चों को मायाजाल में फंसाकर रखने का माध्यम है ये पाठ्यक्रम !

क्योंकि अध्यापक किसी कक्षा में वही पढ़ाता है जोकि पाठ्यक्रम में है !
जोकि अभ्यास क्रम में है !
जोकि क्राफ्ट वर्क या चित्र बनाने हेतु निर्देश है !

और इन सब कार्यो में बच्चों के माता पिता तक शामिल, व्यस्त हो जाते है तो फिर शिक्षक की बीएड डिग्री की उपयोगिता कहाँ है ?

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग -17

स्कूली समय !
(विद्यालय जाने का समय)

भारत देश का विस्तार देशांस (Longitude) 68 डिग्री पूर्व से 98 डिग्री पूर्व तक है अर्थात 30 डिग्री का फर्क !

1 डिग्री स्थल को सूर्य के सामने से पार होने में 4 मिनट लगते है ! अर्थात 30 डिग्री पार होने में 120 मिनट लगेंगे यानी 2 घण्टे !

अर्थात अरुणाचल में यदि सूर्योदय सुबह 5.30 पर दिखाई पड़ा तो गुजरात के अंतिम छोर पर सुबह 8 बजे लोगो को सूर्य के दर्शन होंगे !

इसलिये इस झंझट को दूर करने के लिये मिर्जापुर प्रायागराज से गुजरने वाले देशांश 82 डिग्री को ही आधार माना गया और समय का भारतीय समय IST का निर्धारण इसी से होता है!

और पूरे देश की घड़ियां इसी से एक साथ चलती है!

पर भारत में जहॉ कि कश्मीर का मौसम अलग, मध्यप्रदेश का अलग, हिमाचल का अलग, राजस्थान ,चेन्नई का अलग होता है तो क्या केंद्रीय विद्यालय CBSE पैटर्न के स्कूलों का पुरे देश में एक समय पर खुलना बन्द होना न्यायपूर्ण है ?

क्या इस पध्दति को स्थानिक समय स्थानिक मौसम के अनुरूप नहीं होना चाहिए ?

ये परिवर्तन आखिर क्यों नही हुआ ?

किसी व्यवस्था को परिवर्तित करते समय तर्कपूर्ण तथ्य दिए जाते है किंतु वर्ष 2000 तक 9 बजे से लगने वाला स्कुल 2001 में 7.30 बजे से लगने लगा बिना किसी स्पष्टीकरण के !

क्यों ?

जब 9 बजे से स्कुल लगता तो हिन्दू परम्परा में सुबह उठकर नहाकर बच्चे माता पिता के साथ पूजा आदि करके ही फिर पढ़ने बैठते फिर समय होने पर ऑटो या बस या अन्य साधन से स्कुल जाते !

बच्चे 6 बजे भी उठते तो मुह धोना पेट हल्का करना, नहाना फिर पेट हल्का होने के बाद हल्की भूख लगती तो कुछ हल्का नाश्ता करके जाते!

स्कुल में टिफिन खाते 12 बजे फिर 2.30 बजे वापस और रात का भोजन सबके साथ ये व्यवस्थित दिनर्चया थी !

किंतु 2001 से नई टाइमिंग के अनुसार अब बच्चे सुबह 5.30 बजे उठते है और केवल मुह धोकर ही हड़बड़ी में तैयार होकर चले जाते है !

सुबह पेट साफ नही हुआ तो स्कुल में पेट में गैस होगी ! रात का भोजन सड़ने से और इससे पेट फुला लगेगा !
सुबह नही नहा पाये तो शरीर बेचैन सा लगेगा स्कुल में, जिससे पढ़ाई से भी ध्यान हटेगा फिर 10.30 बजे लंच की छुट्टी होती है !

तो जिस बालक ने सुबह पेट साफ नही किया आंतो में सड़ते हुए भोजेन के ऊपर फिर से नए भोजन की परत आ जाती है !

नतीजा बालक का पेट फूल जाता है (स्वयं देखिये CBSC के बच्चों को पेट फुला तोंद दिखेगी) मोटापा बढ़ेगा !

आंतो में सड़े हुए भोजेन का विष होने से पेट की बीमारियां, पेशाब, कब्ज सम्बन्धी बीमारियां, सिरदर्द, यादाश्त कमजोर, बाल सफेद, आँखों में चश्मा लगने लग जाता है !

अब यही बालक दोपहर में 3 या 4 बजे तक घर पहुचता है, तो शरीर थका होता है क्योंकि भोजन व्यवस्था पूरी बिगड़ी होती है तो बालक सोता है या बेमन से ट्यूशन आदि जाता है!

और ऐसे केंद्रीय स्कुल की समय सारणी में अधिकाँश इसाई मिशनरी स्कुल होते थे पहले (फिर वर्ष 1990 से निजी स्कूल कुकुरमुत्ते की तरह खुल चुके) जिनमे ईसा मसीह की चर्चा चर्च आदि के लोग सुबह से बच्चे को दिखाई पड़ते है जिससे वो बाल्यावस्था में ही इनका मानसिक गुलाम हो जाता है और फिर जीवन में कभी चर्च का विरोध नही कर पाता !

तो मित्रो इस तरह CBSC स्कुल की टाइमिंग हिन्दू घर में विद्यार्थी की प्रात:कालिक हिन्दू धर्म प्रक्रिया को ख़त्म करने गलत अप्राकृतिक समय पर भोजन करवाके उनको रोगी बनाने की योजनाबद्ध नीति है !

डाक्टरो के लिये नए तरह के छोटे मरीजो की श्रृंखला आरम्भ हो जाती है और विदेश से आने वाली दवाईयो, बाल गिरने, बढ़ाने वाले तेलों, पेट दर्द गैस की दैवाईयो की बिक्री बढ़ जाती है !

ये पूरी की पूरी नीति एक श्रृंखलाबद्ध गीरोह की रणनीति ही जानिये !

अरुणाचल से गुजरात तक 2900 किलोमीटर के विशाल देश में भेड़ चाल क्यों और किसके दवाब में ?

परदे के पीछे कौन ?

ऐसी केंद्रीयकृत टाइमिंग की आवाश्यकता है क्या स्कूलों को ?

केंद्रीय बोर्ड को केवल पाठ्यक्रम और प्रक्रिया निर्धारित करनी चाहिए !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग -18

आर्थिक सहायता

मित्रो CBSC पाठ्यक्रम केंद्रीय सरकार के कर्मचारियो की सुविधा के लिये आरम्भ किया गया ताकि दूसरे स्थान दूसरे राज्य में ट्रांसफर होने पर बच्चे को किसी स्कुल के पाठ्यक्रम में दिक्कत ना हो!

फिर धीरे से इस पाठ्यक्रम को मिशनरी स्कूलों ने अपना लिया केंद्रीय विद्यालय के अलावा इन मिशनरी स्कूलों में भी केंद्र के अधिकारी, कर्मचारी अपने बच्चों को भेजने लगे विभिन्न कॉर्यक्रम होने लगे और ये स्कुल लोकप्रिय हुए चमक दमक के कारण जिससे व्यापारी वर्ग भी अपने बच्चों को भेजने लगा !

तो अब जब भी केंद्र सरकार का नया वेतनमान आता है तो इन मिशनरी स्कूलों की फीस तिगुनी हो जाती है !

महंगी फीस के कारण केंद्र के कर्मचारी इन मिशनरी स्कूलों से विमुख ना हो जाए इसके लिए वर्ष 2008 से केंद्र सरकार ने कर्मचारीयो को शिक्षा भत्ता देना आरम्भ किया (कांग्रेस सरकार ने) जोकि वर्तमान में 18 हजार रूपये प्रति स्कुली विद्यार्थी प्रतिवर्ष है यानी 2 बच्चे का 36 हजार रूपये एक कर्मचारी के द्वारा सरकार ने मिशनरी स्कूल को भिजवा दिए!

कर्मचारी सोच रहे है कि सरकार उनके बच्चे को पढ़ाने हेतु आर्थिक सहायता दे रही है जबकि वास्तव में जनता से टेक्स द्वारा वसूले गए रुपयों को एक केंद्र सरकार के कर्मचारी के मॉध्यम से मिशनरी स्कूलों तक पहुचाया जा रहा है !

जोकि फिर एकत्रित होकर अमेरिका, इंग्लैंड आदि चला जाता है और फिर विदेशी सहायता/कर्जे के रूप में वापस भारत आता है जिसके कारण आज प्रत्येक भारतीय पर 30 हजार रूपये का कर्ज है !

अगर सरकार समस्त स्कुल, कालेजो की फीस पर नियंत्रण रखती कम करवाती तो हर बच्चे को लाभ मिलता !

लेकिन उद्देश्य तो ये नही है !

केंद्र सरकार के कर्मचारी के बच्चे मिशनरी के अलावा अन्य निजी स्कूलों में भी पढ़ते है !

इस तरह शिक्षा को महंगी करने में सरकार का भी योगदान है

और अनेक स्कूलों को पहुच रही आर्थिक सहायता में से कुछ बड़ा अंश मिशनरी स्कूलों को भी पहुचता है !

कितना घुमावदार !
सफल आर्थिक रास्ता !

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 19

मित्रो भारत के स्कूली और कालेज पाठ्यक्रम में भारत के हिन्दू इतिहास को पूरी तरह विलोपित कर दिया गया 1950 से !

मोदी सरकार में 2014 में स्मृति ईरानी शिक्षा मंत्री बनी !
अत्यंत तेज तर्रार, बुद्धिमान, त्वरित जवाब देने की तीक्ष्ण बुद्धि, हर टीवी इंटरव्यू में विरोधी पत्रकार की अच्छे से धुलाई करने में क्षमतावान!

तो भारत के प्राचीन इतिहास को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने, व्यर्थ पाठ्यक्रम का बोझ हटाने और अच्छी व्यावहारिक उपयोगी शिक्षा देने हेतु ईरानी जी ने विद्वानों का एक पैनल बनाया जोकि स्कूली पाठ्यक्रम की शुद्धि के लिये जून 2014 से काम करने लगा !

टीवी पर किसी ना किसी चैनल पर हर 3 माह में उनका इंटरव्यू आता (ऐसा लगता है कि इसके बहाने, उनके मुह से उनके मंत्रालय के कार्य उगलवाये जाते थे)

उन्होंने हर इंटरव्यू में ये बात कही थी की स्कूली पाठ्यक्रम संशोधन का कार्य चल रहा है !
पत्रकार एवं कांग्रेस ने आरोप लगाए कि RSS के लोग इतिहास पाठ्यक्रम निर्धारित करने बिठाये हुए है !

लेकिन कार्य पूरा हुआ और 23 जून 2016 को ईरानी जी ने टीवी इंटरव्यू में कहा कि 29 जून 2016 को नई स्कुली शिक्षा नीति नई किताबे लागू हो जाएंगी !

लेकिन अचानक 25 जून 2016 को 4 मंत्रियों का विभाग बदला गया और ईरानी को कपड़ा मंत्री बनाया गया !

तो फिर 29 जून को पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार नई शिक्षा नीति क्यों लागू नहीं हुई ?

जो कार्य लेखन प्रकाशन पूर्ण हो चूका था केवल फीता खोलकर किताबो का विमोचन करना ही बाकी था 29 जून को तो ये कार्य क्यों नहीं हुआ ?

क्या मंत्री बदल जाने से तैयार पुल, बाँध, आरम्भ नही होते ?

2 साल से जिस कार्य की तैयारी, प्रकाशन पूर्ण हो चुका था, नए मंत्री ने उसको 29 जून या कुछ 1 माह बाद तक भी जारी कर सकता था लेकिन आज 1 वर्ष बाद भी ये नहीं हुआ !

क्या आपको याद है 2014 में दिल्ली के एक इसाई स्कुल में किसी ने पत्थर मार दिया तो ईरानी को स्कुल निरीक्षण पर जाना पड़ा और मोदी जी को राष्ट्रीय टीवी पर सफाई देनी पड़ी !

जबकि देश के अनेक स्कूलों, मदरसों, कालेजो आदि में लड़कियों से बालात्कार, हत्या तक हो जाते है और कोई साधारण राज्य सरकार का मंत्री तक कभी स्पष्टीकरण देने टीवी अखबारों में पर नहीं आता !

किंतु एक इसाई स्कुल में 1 पत्थर किसी ने तबियत से उछाल दिया तो भाजपा के हिन्दू तंत्र में छेद हो गया !

अब हम और आप सब समझ जाए कि इस इल्लुमिनाती की कितनी अधिक घुसपैठ है और मोदी भी कुछ बेबस प्रतीत हो रहे है !

संज्ञानात्मक !

क्रमशः

इल्लुमिनाति और शैक्षणिक षड्यंत्र

भाग - 20

MBA, MCA कोर्स !

मित्रो भारत देश में शायद 1990 में MBA, MCA पाठ्यक्रम आरम्भ हुआ!

जो लोग बीएससी, बीई, बीए आदि स्नातक पाठ्यक्रम कर रहे थे या कर चुके थे तो उनको ये नए पाठ्यक्रम समझ में नही आये !
लेकिन कुछ विद्यार्थियों ने MSc में प्रवेश लिया तो कुछ ने MBA, MCA कोर्स पसंद किया !

उस समय शिवखेड़ा नाम के आदमी को पूरे भारत में मैनेजमेंट गुरु बनाकर प्रचारित किया गया !

दैनिक भास्कर ने विराट आयोजन किये हर जिला स्तर के शहर में ताकि इन नए डिग्री कोर्सेस का प्रचार हो युवा आकर्षित हो!
(और आज इस तथाकातीत मैनेजमेंट गुरु का कोई अता पता नही ये केवल एक मुखौटा था)

आगे इन नये विषयों का भविष्य बिल्कुल स्पष्ट नहीं था कि नौकरी कहाँ और कितने वेतन वाली मिलेगी ?

बीएससी के बाद आरंभिक कम्प्यूटर कोर्स करने वालो को मेरे बड़े भाई ने फटी चप्पल पहने देखा था 1989 में !

फिर 1995 में भारत में अचानक एक आर्थिक अंतराष्ट्रीय विस्फोट होता है और प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव डंकल प्रस्ताव स्वीकार कर लेते है और GATT समझौते पर हस्ताक्षर किये जाते है !

WTO का मुख्यालय भारत में खुल जाता है और विदेशी कम्पनियो को बैंक, बीमा, उद्योग, निर्माण, विदेशी उत्पाद की भारत के खुले बाजार में मार्केटिंग, अमेरिकी कम्प्यूटर कम्पनियो के काल सेंटर भारत में खोलने की अनुमति मिल जाती है !

और अब रहस्य खुलता है 1990 में आरम्भ की गई MBA, MCA डिग्रियों का !

GATT समझौता यु ही अचानक 1995 में हस्ताक्षरित नही हुआ था !

बल्कि ये पूर्व निर्धारित वर्ष था और भारत के लोगो को दिखाने के लिये कि हमको अंतर राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा करनी है तो 1 साल तक GATT पर भारत सरकार और WTO की नूरा कुश्ती, चर्चा, विरोध, आदि चलती रही !

फिर 1995 में नरसिम्हाराव ने हस्ताक्षर किया जोकि पूर्व निर्धारित सटीक वर्ष समय था !

अब भारत में और अंतरराष्ट्रीय बाजार हेतु विदेशी व्यापारियों कम्पनियो को नये तरह के उत्पाद की नौकरी हेतु नए तरह की व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त प्रत्याशियों की जरुरत पड़नी थी !

इस समझौते के बाद अचानक बहुत सारे मेनेजर, कम्प्यूटर संचालक, प्रोग्रामरों की आवश्यकता पड़नी थी !

तो इसकी पूर्ति के लिये 1990 से ही भारत में तैयारी आरम्भ हो चुकी थी और 1995 तक जब 5 साल में पर्याप्त डिग्री वाले लोग तैयार हो गए तो 1995 में डंकल प्रस्ताव लागू हो गया !

भारत में धड़ाधड़ विदेशी संस्थान खुलने लगे 1998 तक ये कम्पनिया भारत में पूर्ण रूप से हर बड़े शहर के स्थापित होने लगी !

बैंकों के लिये मैनेजर की योग्यता MBA (जोकि पहले MCom वाले होते थे) निर्धारित की गई, बहुराष्ट्रीय, अमेरिकन कम्पनियो के काल सेंटर, विदेशी बीमा कम्पनी एवम कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग विकसित करने हेतु कम्प्यूटर प्रोफेसनल्स की आवश्यता हुई !

तो MCA वाले डिग्री हाथ में लेकर तैयार खड़े थे, हजारो लोगो को रोजगार मिला और तत्कालीन प्रचलित वेतन से 4 गुना वेतन मिलना आरम्भ हुआ !

और इस तरह एक बना बनाया बौद्धिक इंफ्रास्ट्रक्चर विदेशी कम्पनियों को मिल गया भारतीय खर्चे पर !

और भारत के लोगो ने समझा कि कितना अच्छा हुआ पर परदे के पीछे का असली खेल कुछ और ही था !

भारत के लोग ये नही समझ पाए कि इल्लुनमिनाती के योजनाबद्घ चरण के अनुसार बैंकरों को तैयार किया गया !

भारतीयों को बहुत उच्च वेतन मिल रहा था तो नुक्सान क्या हुआ ?

नुक्सान ये हुआ कि पूरे भारत का श्रेष्ठतम दिमाग इन विदेशी कम्पनियो की सेवा में लग गया !

जो दिमाग बैकिंग, मार्केटिंग, कॉल सेंटर BPO, प्रोग्रामिंग में लग रहा था उस आविष्कारक भारतीय दिमाग को नरसिम्हाराव सरकार ने उत्पादक मालिक की जगह सेवक बना दिया !

अमेरिका की मोबाइल, कम्प्यूटर कम्पनियो को चलाने वाले कम्प्यूटर मोबाइल निर्मित करने वाले, फेसबुक, हॉटमेल का आविष्कार करने वाले भारतीय लड़के ही थे !

तो जिन लड़को को मालिक बनकर उद्योग कम्पनियो, मोबाइल, कम्प्यूटर, का निर्माण भारत में करना था !

पूरी दुनिया में भारत निर्मित सस्ते मोबाइल, कम्प्यूटर को छा जाना था और इन चीजो को विदेश में बेचकर भारत की आर्थिक स्थिति पुरे यूरोप के बजट से 100 गुनी बेहतर हो जाती केवल 10 साल में ही !

पर वही लड़के मजबूरी में 1995 से आज तक इन कम्पनियो की सेवा में 24x7 घण्टे खून सुखाते हुए लगे हुए है !

क्योंकि **1930 से लेकर अब तक की भारतीय दिमाग का अध्ययन करके ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीयों (हिन्दू, जैन, सिख, बौद्ध) से अच्छे, विश्वासपात्र, आज्ञाकारी, बुद्धिमान दुनिया की कोई दूसरी कौम नहीं है !**

अब षड्यंत्र के तहत भारत में स्वदेशी मोबाइल, स्वदेशी कम्यूटर के निर्माण की अनुमति नही दी गई भारत सरकार द्वारा !

मालिक को नौकर बनाकर रखने की योजना हेतु इल्लुमिनाती कदम दर कदम कार्य निर्धारित करता है 1990 के नये पाठ्यक्रमो से स्पष्ट है !

भारत की शिक्षा नीति कोर्स सब अमेरिकन यूरोप की आवश्यकता के अनुरूप निर्धारित होता है !